SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावकों के प्रोत्साहन का प्रभाव: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (पटना के संदर्भ में)

शैलेन्द्र कुमार सिंह, (Ph.D.), शोध निर्देशक, शिक्षा संकाय,
सेलिना कुमारी, शोधार्थी, शिक्षा संकाय,
रामचन्द्र चंद्रवंशी विश्वविद्यालय, विश्रामपुर, पलामू, झारखंड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors

शैलेन्द्र कुमार सिंह, (Ph.D.), शिक्षा संकाय,
शोध निर्देशक,
सेलिना कुमारी, शोधार्थी, शिक्षा संकाय,
रामचन्द्र चंद्रवंशी विश्वविद्यालय,
विश्रामपुर, पलामू, झारखंड, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 04/06/2022
Revised on : -----
Accepted on : 11/06/2022
Plagiarism : 04% on 06/06/2022

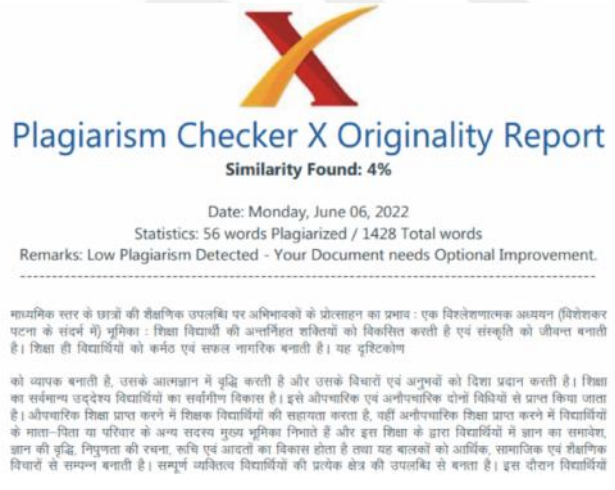

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 4%

Date: Monday, June 06, 2022
Statistics: 56 words Plagiarized / 1428 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावकों के प्रोत्साहन का प्रभाव : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (विशेशकर पटना के संदर्भ में) भूमिका : शिक्षा विद्यार्थी की अन्तर्निहत शक्तियों को विकसित करती है एवं संस्कृति को जीवन्त बनाती है। शिक्षा ही विद्यार्थियों को कर्मठ एवं सफल नागरिक बनाती है। यह दृष्टिकोण

को व्यापक बनाती है, उसके आत्मज्ञान में वृद्धि करती है और उसके विचारों एवं अनुभवों को दिशा प्रदान करती है। शिक्षा का सर्वमान्य उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास है। इसे औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों विधियों से प्राप्त किया जाता है। औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने में शिक्षक विद्यार्थियों की सहायता करता है, वहीं अनौपचारिक शिक्षा प्राप्त करने में विद्यार्थियों के माता–पिता या परिवार के अन्य सदस्य मुख्य भूमिका निभाते हैं और इस शिक्षा के द्वारा विद्यार्थियों में ज्ञान का समावेश, ज्ञान की वृद्धि, निपुणता की रचना, रूचि एवं आदतों का विकास होता है तथा यह बालकों को आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक विचारों से सम्पन्न बनाती है। सम्पूर्ण व्यक्तित्व विद्यार्थियों की प्रत्येक क्षेत्र की उपलब्धि से बनता है। इस दौरान विद्यार्थियों

शोध सार

शिक्षा विद्यार्थी की अन्तर्निहित शक्तियों को विकसित करती है एवं संस्कृति को जीवन्त बनाती है। शिक्षा ही विद्यार्थियों को कर्मठ एवं सफल नागरिक बनाती है। यह दृष्टिकोण को व्यापक बनाती है, उसके आत्मज्ञान में वृद्धि करती है और उसके विचारों एवं अनुभवों को दिशा प्रदान करती है। शिक्षा का सर्वमान्य उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास है। इसे औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों विधियों से प्राप्त किया जाता है। औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने में शिक्षक विद्यार्थियों की सहायता करता है, वहीं अनौपचारिक शिक्षा प्राप्त करने में विद्यार्थियों के माता–पिता या परिवार के अन्य सदस्य मुख्य भूमिका निभाते हैं और इस शिक्षा के द्वारा विद्यार्थियों में ज्ञान का समावेश, ज्ञान की वृद्धि, निपुणता की रचना, रूचि एवं आदतों का विकास होता है तथा यह बालकों को आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक विचारों से सम्पन्न बनाती है।

मुख्य शब्द

शिक्षा, विद्यार्थी, अभिभावक.

भूमिका

सम्पूर्ण व्यक्तित्व विद्यार्थियों की प्रत्येक क्षेत्र की उपलब्धि से बनता है। इस दौरान विद्यार्थियों के समक्ष शिक्षा से संबंधित विभिन्न प्रकार की जटिलतायें आती है। विद्यार्थियों की इन जटिलताओं को अभिभावक अपने स्नेह और प्रोत्साहन से सरल बनाता है। यह प्रोत्साहन विद्यार्थियों को शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। इस प्रकार अभिभावक प्रोत्साहन को शिक्षा में पर्याप्त महत्व दिया जाना आवश्यक है जिससे छात्रों में उत्साह व हिम्मत बढ़ती है। परिणामस्वरूप विद्यार्थी अपने जीवन में आने वाली विभिन्न कठिनाईयों का सामना

करते हैं तथा उनको दूर करने में निराशा का अनुभव करके वे निरंतर उन्नति करते हैं।

विद्यालय में छात्र औपचारिक शिक्षा प्राप्त करते हैं। वहाँ विभिन्न परिवार एवं परिवेश के छात्र पढ़ते हैं। पढ़ाई विद्यालय में समान रूप से होती है परन्तु छात्रों के शैक्षणिक उपलब्धि अलग–अलग होती है। इसका एक कारण अभिभावकों का प्रोत्साहन है, जो अभिभावक अपने बच्चों को जितना प्रोत्साहन देते हैं, उनके बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि उनती अधिक होती है। अतः स्पष्ट है कि छात्रों के शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावक के प्रोत्साहन का स्पष्ट प्रभाव पड़ता है। वर्तमान शोध में माध्यमिक स्तर के छात्रों के शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावक के प्रोत्साहन का प्रभाव का विश्लेषण किया जायेगा।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व

वर्तमान युग प्रतिस्पर्धा का युग है, ऐसे में अभिभावक अपने बच्चों के भविष्य के प्रति चिन्तित दिखाई देते हैं। अभिभावक उन्हें अच्छी से अच्छी सुविधा प्रदान करते हैं और उन्हें अच्छे से अच्छे विद्यालय में प्रवेश दिलाते हैं, तथापि वे अपने बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि से संतुष्ट नहीं दिखाई देते। इसी प्रयास में कई अभिभावक जिनके आस–पास अच्छे विद्यालय नहीं होते या अन्य कई कारणों से अपने बच्चों की शिक्षा में आने वाली कठिनाईयों को दूर करने के लिए उन्हें दूसरे स्थानों के अच्छे विद्यालय में प्रवेश दिलाते हैं। अक्सर अभिभावक सुविधाएं तो मुहैया करा देते हैं, परन्तु बालक की रूचि एवं प्रोत्साहन पर ध्यान नहीं देते, जिससे बालक का स्वाभाविक विकास नहीं हो पाता है, परिणामतः छात्रों का शैक्षणिक उपलब्धि प्रभावित होता है। अतः वर्तमान में शोध आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है।

शोध संक्रियात्मक परिभाषाएं

1. **माध्यमिक विद्यालयः** वे विद्यालय 9 वीं एवं 10 वीं कक्षा की शिक्षा प्रदान की जाती है, माध्यमिक विद्यालय कहलाता है।

   डॉ. आत्मानन्द मिश्र के शब्दों में ''देश के भावी कर्णधार माध्यमिक शिक्षा के ही ढाँचे में बनते और बिगड़ते हैं। सभी क्षेत्रों में नेतृत्व करने की क्षमता, इसी स्तर पर उत्पन्न की जाती है, दुर्भाग्यवश शिक्षा की यह कड़ी, जितनी महत्वपूर्ण और अनिवार्य है, उतनी हीं निर्बल और उपेक्षित भी।''

2. **शैक्षिक उपलब्धिः** शैक्षिक उपलब्धि बालक की वर्तमान योग्यता या किसी विशिष्ट विषय क्षेत्र में उसकी ज्ञान की सीमा का मूल्यांकन है।

   सैक्स (SAX, 1974) के अनुसार ''मानकीकृत शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण द्वारा पाठ्यचर्या क्षेत्र, जो अधिकतर स्कूल में सामान्य है, छात्रों के शिक्षण की मात्रा को मापा जाता है।''

   सुपर (SUPER) के शब्दों में ''एक उपलब्धि या क्षमता परीक्षण यह ज्ञात करने के लिए प्रयोग किया जाता है, कि व्यक्ति ने क्या और कितना सीखा तथा वह कोई कार्य कितनी भली–भाँति कर लेता है।''

3. **प्रोत्साहनः** प्रोत्साहन अभिप्रेरण का एक कारक है, जो बालक के किसी क्रिया एवं व्यवहार को आरम्भ करने की प्रवृत्ति को जागृत करता है। प्रोत्साहन का संबंध बाह्य वातावरण तथा बाहरी वस्तुओं से होता है। प्रोत्साहन व्यक्ति की आवश्यकताओं को संतुष्ट करने में मदद करता है।

4. **अभिभावक प्रोत्साहनः** यह वास्तव में बच्चों को अभिभावकों द्वारा किया जाने वाला एक उपचार है, जिससे बालकों के प्रति अभिभावकों के मार्गदर्शन, अनुमोदन, चिंतन एवं देखभाल के द्वारा अच्छे व्यवहार एवं उनके भविष्य सुधार की संभावनाएं बढ़ जाती है। अभिभावक की ओर से किया जाने वाला प्रोत्साहन बालकों की हर तरह से सहायता एवं मार्गदर्शन प्रदान करता है।

शोध का उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर के बालकों के शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावकों के प्रोत्साहन के प्रभाव को स्पष्ट करना।
2. बालिकाओं के शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावकों के प्रोत्साहन के प्रभाव का उल्लेख करना।
3. सरकारी विद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों का शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावकों के प्रोत्साहन के प्रभाव का

विश्लेषण करना।

4. प्राइवेट स्कूल में पढ़ने वाले छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावकों के प्रोत्साहन के प्रभाव का विश्लेषण करना।

शोध प्रश्न

1. क्या बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके अभिभावक के प्रोत्साहन का प्रभाव पड़ता है?
2. क्या अभिभावक द्वारा दिये जाने वाले प्रोत्साहन छात्रों को मार्गदर्शिता एवं प्रोत्साहित करता है?
3. क्या अभिभावक के प्रोत्साहन से छात्रों में गुणवतापूर्ण शिक्षा का विकास होता है?

परिकल्पना

1. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

परिसीमन

यह शोध बिहार राज्य के अंतर्गत पटना के माध्यमिक स्तर के छात्रों तक सीमित रहेगा।

अनुसंधान अभिकल्प

1. **अध्ययन क्षेत्रः** प्रस्तुत शोध अध्ययन क्षेत्र के रूप में पटना का चयन किया जाएगा। बहुस्तरीय निदर्शन प्रणाली के आधार पर पटना जिला के माध्यमिक विद्यालय का चयन कर तथ्यों का संकलन किया जाएगा ।
2. **निदर्शः** निदर्शन पद्धति के आधार पर पर्याप्त एवं प्रतिनिधित्वपूर्ण निदर्श का चयन किया जाएगा। उत्तरदाताओं के रूप में माध्यमिक स्तर के नवमी एवं दसवीं कक्षा के छात्र एवं छात्राओं का चयन किया जाएगा।
3. **अनुसंधान संरचनाः** प्रस्तुत शोध हेतु विश्लेषणात्मक अनुसंधान संरचना का निर्धारित किया जाएगा।
4. **अध्ययन का प्राथमिक उपकरणः** साक्षात्कार एवं प्रश्नावली के आधार पर विश्वसनीय तथ्यों का संकलन किया जाएगा। साक्षात्कार के क्रम में साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया जाएगा। आवश्यकतानुसार प्रश्नावली का भी उपयोग किया जा सकता है। शैक्षणिक उपलब्धि के लिए माध्यमिक स्तर का परीक्षाफल को लिया जायेगा।
5. **सारणीयनः** क्षेत्रीय अध्ययन के आधार पर संकलित तथ्यों का मूल्यांकन कर तालिकाबद्ध वर्णन एवं विश्लेषण किया जाएगा।

प्रस्तुत शोध में शैक्षिक उपलब्धि के लिए माध्यमिक स्तर का परीक्षाफल लिया गया है। सांख्यिकी तकनीकी में मध्यमान, मानक विचलन, एस.ई.डी. एवं टी टेस्ट के द्वारा विश्लेषण एवं व्याख्या की गई है।

शोध विशलेषण

परिकल्पना क्रमांक 1: माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी क्रमांक 1: माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के t मान का विश्लेषण

क्र.सं.	समूह	N	M	S.D.	S.Ed	t	0.05 सार्थकता स्तर
1	कुल छात्र	100	50.540	6.937	0.7319	8.90	सार्थक
2	कुल छात्राएं	100	57.055	5.029			

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

df=198 0.05–1.99

विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि छात्राओं का मध्यमान 57.055 प्राप्त हुआ है, जबकि छात्रों का

मध्यमान 50.54 प्राप्त हुआ है, जो कि छात्राओं का मध्यमान, छात्रों से अधिक है। t का मान df 198 पर 8.90 प्राप्त हुआ है, जो 0.05 स्तर पर अंतर सार्थक प्राप्त हुआ है। अतः पूर्ण परिकल्पना को निरस्त किया जाता है। अतः छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि छात्रों की तुलना में बेहतर पाई गई।

निष्कर्ष

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को ज्ञात करके अभिभावकों के प्रोत्साहन के प्रभाव को जानकर विद्यार्थियों में भावी जीवन के लिए एक सकारात्मक दिशा प्रदान की जा सकती है। उनको और अधिक प्रोत्साहित कर उनके शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाई जा सकती है तथा विद्यार्थियों का व्यक्तिगत विकास, सामाजिक विकास व राष्ट्रीय विकास की ओर अग्रसर किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. सोअद, एम, सिंह, आर.आर एण्ड सिंह, एम.के, रिलेशनशिप विटविन पैरेन्टल एटीटयूड्स एण्ड एचीवमेन्ट मोटीवेशन एमंग पहारिया हाई स्कूल स्टूडेन्ट्स, *साइकोलॉजीकल स्टडीज* 1987
2. परमेश, सी.आर. एण्ड नारायणननए एस. क्रिएटिविटि इन्टैलिजेन्स, ए फैक्टोरियल स्टडी, *Journal of Psychological Research* 1993।
3. मेहताए के.के. पैरेन्ट्स चाइल्ड रिलेशनशिप एन एमरटेन्ट इनवॉर्नमेन्टल वेरियवल इन्फ्सूएशिंग इन्टैलिजेन्स ऑफ चिल्ड्रन, *जनरल ऑफ साइकोलॉजिकल रिसर्चस* 1994
4. हजारी, ए, एण्ड ठाकुर, जी.पी., दि रिलेशन बिटवीन मेनिफेस्ट एंग्जाइटी एण्ड इन्टेलिजेन्स, *जनरल ऑफ एजुकेशन एण्ड साइकोलॉजी,* 1970
5. नागमणि, के, उच्च शिक्षित, अशिक्षित एवं निम्न शिक्षित अभिभावकों के पाल्यों के व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन, रविशंकर शु.वि.वि., रायपुर, 2003
6. शर्मा, रामनाथ, *शिक्षा मनोविज्ञान,* रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, 1974
7. पचौरी, रामनाथ, *शिक्षा मनोविज्ञान का आधार,* आर.लाल बुक डिपो, मेरठ, 2012

****